कक्षा –IX

केदार नाथ अग्रवाल

|  |  |
| --- | --- |
| मुख्य बिन्दु | व्याखा |
| कविता मे कवि का प्रक्रति के प्रति गहन अनुराग व्यक्त हुआ है। |  |
| चन्द्र गहना नामक स्थान से लौट रहा है । | लौटते हुए उसके किसान मन को खेत –खलिहान एव उनका प्रकर्तिक परिवेश सहज आकर्षित कर लेता है। |
| इस कविता मे प्रकर्ति ओर संस्कृति की एकता व्यक्त हुई है। | इस कविता मे कवि की उस सृज्नात्मक कल्पना की अभिव्यक्ति है जो साधारण चीजों मे भी असाधारण सोन्दर्ये को शहरी विकास की तीव्र गति के बीच भी अपनी स्वेदना मे सुरक्षित रखना चाहती है । |

सर्वेशवर दयाल सक्सेना

|  |  |
| --- | --- |
| मुख्य बिन्दु | व्याखा |
| कविता मे कवि ने मेघो के आने कि तुलना सजकर आए प्रवासी अतिथि से कि है। | ग्रामीण संस्कृति मे दामाद के आने पर उल्लास का जो वातावरण बनता है, मेघों के आने का सजीव वर्णन करते हुए कवि ने उसी उल्लास को दिखया। |

चंद्रकांत देवताले

|  |  |
| --- | --- |
| मुख्य बिन्दु | व्याखा |
| कवि सभ्यता के विकास कि खतरनाक दिशा कि ओर इसारा करते हुए कहना चाहता हे कि जीवन –विरोधी ताकते चारों तरफ फैलती जा रही है । | जीवन के दुख –दर्द के बीच जीती माँ अपशकुन के रूप मे जिस भय कि चर्चा करती थी, अब वह सिर्फ दक्षिण दिशा मे ही नही है, सर्वव्यापक है। सभी तरफ फैलते विध्वंस हिंसा ओर मृत्यु के चिन्हो कि ओर इंगित करके कवि इस चुनोती के सामने खड़ा होने का मोन आव्हान करता है। |

राजेश जोशी

|  |  |
| --- | --- |
| मुख्य बिन्दु | व्याखा |
| कविता मे बच्चों से बचपन छीन लिए जाने कि पीड़ा व्यक्त हुई है। | कवि ने उस सामाजिक –आर्थिक विडम्बना कि ओर इसारा किया हे जिसमे कुछ बच्चे खेल, शिक्षा ओर जीवन कि उमंग से वंचित है। |

नाना साहब कि पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया

|  |  |
| --- | --- |
| मुख्य बिन्दु | व्याखा |
| 1857 की क्रान्ति के विद्रोही नेता धुंधपंत नाना साहब की पुत्री बालिका मैना बालिका मैना आजादी की नन्ही सिपाही थी। | जिसे अंग्रेज़ो ने जलाकर मर डाला। मातृभूमि की स्वतन्त्रता ओर उसकी रक्षा के लिए जिन्होने अपने प्राण न्योछावर कर दिये उनके जीवन का उत्कर्ष हमारे लिए गौरव ओर सम्मान की बात है। |
| 1857 के विद्रोही नेता नाना साहब कानपुर से असफल होने पर जब भागने लगे। | तो जल्दी मे अपनी पुत्री मैना को साथ न ले जा सके बिठुर मे पिता के महल मे रहती थी पर विद्रोह दमन करने के बाद अंग्रेज़ो ने बड़ी ही क्रूरता से निरपराध देवी को अग्नि भस्म कर दिया। |
| जनरल हे की पुत्री मेरी से मैना की मित्रता  प्रधान सेनापति जनरल अहट्रम व्हा पहुचे। | अभी तक महल टॉप से क्यो नही उड़ाया । |

प्रेम चंद के फटे जूते

|  |  |
| --- | --- |
| मुख्य बिन्दु | व्याखा |
| उपन्यास सम्राट, महान कथाकार युग –प्रवर्तक प्रेम प्रेम चंदके व्यक्तित्व की सादगी का विवेचन किया। | रचनाकार की अंतर्भेदी सामाजिक दृष्टि का विवेचन करते हुए आज की दिखावे की प्रवृति एव अवसरवादिता पर व्यंग्य किया है। |
| बायें जूते मे बड़ा छेद हो गया है। | अंगुली बाहर निकाल आई हे। |
| लेखक का जूता भी अच्छा नही है अंगूठे के नीचे तला फट गया है। | अंगूठा जमीन से घिसता है तुम पर्दे का महत्व ही नही जानते,हम पर्दे पर ही कुर्बान हो रहे है। |
| प्रेमचंद की व्यंग्य मुस्कान लेखक के होसले पस्त कर देती हे । | होरी का गोदान हो गया पूस की रात मे नीलगाय हलकू का खेत चर गई । सुजान भगत का लड़का मर गया क्योकि डा.क्लब छोड़कर नही आ सकते। माधो औरत के कफन के चंदे की शराब पी गया। |
| चलने से जूता घिसता हे फटता नही | टीले पर ठोकर मार –मारकर अपना जूता फाड़ लिया । |

मेरे बचपन के दिन

कक्षा-IX

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| क्रम | मुख्य बिन्दु | व्याखा |
| 1 | राहुल जी की प्रथम यात्रा से लिया गया | यह तिब्बत यात्रा 1929-30 मे नेपाल के रास्ते की थी उस समय भारतीय को तिब्बत यात्रा की अनुमति नही थी उन्होने यह यात्रा एक भीखमंगे के छदम वेश मे की थी एसमे तिब्बत की राजधानी लहसा की ओर जाने वाले दुर्गम रास्तो का वरन उन्होने बहुत रोचक शैली मे किया हे यात्रा वर्तान्त से हमे उस समय के तिब्बत समाज के बारे मे भी जानकारी मिलती हे। |
| 2 | पहला चीनी किला | सैनिक रास्ता भी था |
| 3 | थोडला | दो बार आए लेखक सुमति के जान पहचान चन के आदमी थे |
| 4 | सबसे विकट डांडा थोडला पार करना था | डांडा सबसे खतरनाक जगह हे |
| 5 | तिब्बत का सामाजिक जीवन | जाति पाँति ,छुआ छूत का सवाल नही ओर न औरते पर्दा ही करती हे हथियार का कानून न रहने के कारण यहा लोग लाठी की तरह की पिस्तोल ,बंदूक लिए फिरते हे। |
| 6 | लड्कोर | दो घोड़े किए |
| 7 | डांडे का प्रकर्तिक सोन्दर्ये | समुद्रतल से 17-18 हजार फीट ऊंचे खड़े थे पहर बिलकुल नंगे थे न बरफ ओर न हरियाली देवता का स्थान लेखक रास्ता भटक गया |
| 8 | टिड़री | पहरो से घिरा टापू सा था |
| 9 | शंकर विहार | शंकर की खेती के मुखिया भिक्षु बड़े भद्र पुरुष थे |

उपभोक्तावाद की संस्कृति- श्याम चरण दुबे

|  |  |
| --- | --- |
| उपभोक्तावाद की संस्कृति | लेखक का मानना हे की हम विज्ञापन की चमक धमक के कारण वस्तुओ के पीछे भाग रहे हे हमारी निगाह गुणवत्ता पर नही हे |
| बाज़ार की गिरफ्त मे आ रहे समाज की वास्तक्विकता को प्रस्तुत करता हे स | संपन ओर अभिजन वर्ग द्वारा प्रद्रशन पूर्ण जीवन शैली अपनाई जा रही हे जिसे सामान्य जन भी ललचाई निगाहो से देखते हे |
|  | लेखक की यह बात महतव्पूर्ण हे की जसे तेसे यह दिखावे की संस्कृति फेलेगी ,सामाजिक अशांति ओर विषमता भी बढ़ेगी। |

साँवले सपनों की याद –जाबिर हुसेन

|  |  |
| --- | --- |
| मुख्य बिन्दु | व्याखा |
| सलीम अली पक्षी विज्ञानी के मरने से उत्पन्न दुख ओर अवसाद को लेखक ने साँवले सपनों की याद के रूप मे वयक्त किया हे |  |
| सलीम अली का व्यक्ति चित्र प्रस्तुत किया हे | केंसर जेसी जानलेवा बीमारी उनकी मौत का कारण बनी |
| बर्ड वाचर | सलीम अली उन लोगो मे थे जो प्रकर्ति के प्रभाव मे आने की बजाय प्रकर्ति को अपने प्रभाव मे लाने के कायल होते हे |
| सलीम अली का प्रयावरण प्रेम प्रधानमंत्री से मिलन | जीवसाथी तहसीना थी स्कूल के दिनो मे सहपाठी थी सैलेंट वेली को रेगिस्तान हवा को झोंके से बचने के अनुरोध लेकर चौधरी चरण सिंह से मिले |
| सलीम अली की आत्मकथा का नाम फाल ऑफ स्पैरो |  |
| सलीम अली के जीवन की नई दिशा | बचपन के दिनो मे उनकी एयर गन से घायल होकर गिरने वाली नील कंठ की वह गोरेया सारी ज़िंदगी उन्हे खोज के नये नये रास्तो की तरफ ले जाती रही । |
|  |  |

मेरे बचपन के दिन – महादेवी वर्मा

|  |  |
| --- | --- |
| बचपन के दिनो मे महादेवी जी ने अपने बचपन के दिनो की स्म्रती के सहारे लिखा हे जब वे स्कूल मे पढ रही थी | ईस अंश मे लड़कियो के प्रति सामाजिक रूझन , स्कूल की सहपाठिनो छात्रावास के जीवन ओर स्वतन्त्रता आंदोलन के प्रसंगो का बहुत ही सजीव चित्रण किया हे । |
| दो सौ वर्ष तक कोई लड़की नही थी | बाबा फारसी ओर उर्दू जानते थे । पिता ने अग्रेजी पढ़ी थी मटा से हिन्दी संस्कृत भी पढ़ी । |
| लड़कियो के प्रति सामाजिक रूझन , स्कूल की सहपाठिनो छात्रावास के जीवन ओर स्वतन्त्रता आंदोलन के प्रसंगो का बहुत ही सजीव चित्रण किया हे । | पांचवे दर्जे मे क्रस्थ्वेत गर्ल्स कॉलेज भेजा वंही सुभद्रा कुमारी से परिचय संतवे दर्जे मे वह थी ब्रज भाषा मे लिखना आरंभ किया  कटोरा बापू को डे दिया |
| पारिवारिक बंधन | जेबुनिसा का कमरे मे आकर रहना  जावरा के नवाब  टाई साहिबा  मनमोहन बालक का होना |

एक कुत्ता ओर एक मेना – हजारी प्रसाद

|  |  |
| --- | --- |
| निबंध मे न केवेल पशु पक्षियो के प्रति मानवीय प्रेम प्रदर्सित हे बल्कि पशु पक्षियो से मिलने वाले प्रेम भक्ति , विनोद ओर करुणा जेसे मानवीय भावो का विस्तार भी हे | रवीन्द्रनाथ की कविताओ ओर उनसे जुड़ी स्मर्तियों के संहारे गुरुदेव की सवेदनसिलता आंतरिक विराटता ओर सहजता के चित्र तो उकेरे ही गये हे पशु पक्षियो के स्वेदनसिलता जीवन का भी बहुत सूक्षम निरीक्षण हे । यह निबंध सभी जिवो से प्रेम की प्रेरणा देता हे |
| गुरुदेव के अमन मे शांति निकेतन को छोड़कर श्रीनिकेतन के पुराने तिमंज़िले मकान मे कुछ दिन रहे | प्रति दिन प्रातकाल यह भक्त कुत्ता स्तब्ध होकर आसन के पास तब तक बेठ जाता हे जब तक अपने हाथो से स्पर्श से मे संग नही स्वीकार करना  कोवे कहा ज्ञे  लंगड़ी मेना फुदक रही थी |

सुमित्रानंदन पंत –ग्रामश्री

|  |  |
| --- | --- |
| मुख्य बिन्दु | व्याखा |
| ग्रामश्री कविता मे पंत ने गाँव की प्राकर्तिक सुषमा ओर समृदि का मनोहारी व्याखा की हे | खेतो मे दूर तक फेली लहलहाती फसले ,फल फूलों से लदी पेड़ो की डालियाँ ओर गंगा की सुंदर रेती सुमित्रानंदन पंत को रोमांचित करती हे |

मानवीय करुणा की दिव्य चमक

|  |  |
| --- | --- |
| मुख्य बिन्दु | व्याखा |
| यह संस्मरण फादर बूलके जो बेल्जियम मे थे किन्तु उन्होने अपनी करम भूमि बनाया भारत माँ को | फादर बूलके पादरी के सफेद चोगे से ढकी आकर्ति एक उदास शांत, संगति को सुनने जेसा हे |
| लेखक का मानना हे की जब तक रामकथा हे , विदेसी भारतीय साधू को याद किया जायेगा तथा हिन्दी भाषा ओर बोलियों के अगाध प्रेम का उदाहरण माना जायेगा |  |

**माखन लाल चतुर्वेदी – कैदी ओर कोकिला**

|  |  |
| --- | --- |
| मुख्य बिन्दु | व्याखा |
|  |  |
| ब्रिटानी उपनिवेशवाद के शोषण तंत्र पर बारीकी विश्लेषण हे । | कवि जैल मे एकाकी ओर उदास हे । |
|  | कोयल से अपने मन का दुख असंतोष ओर ब्रितानी शासन के प्रति अपने आक्रोश को व्यक्त कराते वह कहना हे की यह समय मधुर गीत गाने का नही बल्कि मुक्ति गीत सुनाने का हे । |
| कविता मे भारतीय स्वाधीनसता सैनानियों के साथ जैल मे किए गए खराब बर्ताव ओर यातनाओ का मार्मिक चित्रण प्रतुस्त किया गया हे । | कवि कहता हे कोयल भी पूरे देश को एक कारागार के रूप मे देखने लगी हे एसलिए आधी रात्री मे चीख उडी हे । कविता राष्ट्रीय भावना से युक्त हे। उनमे स्वतन्त्रता की चेतना के साथ देश के लिए त्याग बलिदान की भावना मिलती हे। |

वाख

|  |  |
| --- | --- |
| मुख्य बिन्दु | व्याखा |
| ललध्य कश्मीरी कवयित्री हे एनहोने ईश्वर प्राप्ति के लिए किए जाने वाले अपने प्रयासो की की चर्चा की हे । | ईश्वर प्राप्ति के लिए किए प्रयास |
| जाति ओर धर्म की संकीन्ताओ से उपर उठकर भक्ति के रास्ते पर चलने पर ज़ोर दिया |  |
| धार्मिक आडंबरो को विरोध |  |
| प्रेम को सबसे बड़ा मूल्य बताया |  |
| मनुष्य के संभावी होने का महत्व | अत कारण मे से संभावी होने पर ही मनुष्य की चेतना व्यापक हो सकती हे । |
| मयजल मे कम से कम लिप्त होना चाहिए |  |
| कवयित्री के आत्मलोचन की अभिवयक्ति हे | भवसागर से पर जाने के लिए सद कर्म ही सहायक हे |
| ईश्वर की सर्वा व्यापकता का बोध धार्मिक भेदभाव का विरोध भाषा कश्मीरी |  |

रसखान – सवैये

|  |  |
| --- | --- |
| मुख्य बिन्दु | व्याखा |
| कृष्ण ओर कृष्ण भूमि के प्रति कवि का अनन्या समर्पण –भाव | कृष्ण भक्त रसखान की अनुरक्ति ने केवल कृष्ण के प्रति प्रकट हुई हे बल्कि कृष्ण भूमि के प्रति भी उनका अनन्य अनुराग व्यक्त हुआ हे । |
| कृष्ण की रूप माधुरी ब्रज महिमा राधा कृष्ण की प्रेम लीलाओ का मनोहर वरन्न मिलता हे | कृष्ण ओर कृष्ण भूमि के प्रति संप्रन का भाव |
| कृष्ण के रूप-सोन्दर्य के प्रति गोपियो की मुक्तता | जिसमे वे स्वयं कृष्ण का रूप धरण कर लेना चाहती हे। प्रेम की तन्मयता , भाव विठ्ल्ता ओर आसक्ति के उल्लास का वरन्न हे । |
| कृष्ण की मुरली की धुन की व्याखा | कृष्ण की मुरली की धुन ओर उनकी मुस्कान के अचूक प्रभाव तथा गोपियो की विवशता की व्याखा हे |
| रसखान के सवैये की भाषा ब्रजभाषा हे । | कृष्ण की मुस्कान मे सम्मोहक हे उससे बचा जा सकता हे। |

मेरे बचपन के दिन – महादेवी वर्मा

|  |  |
| --- | --- |
| बचपन के दिनो मे महादेवी जी ने अपने बचपन के दिनो की स्म्रती के सहारे लिखा हे जब वे स्कूल मे पढ रही थी | ईस अंश मे लड़कियो के प्रति सामाजिक रूझन , स्कूल की सहपाठिनो छात्रावास के जीवन ओर स्वतन्त्रता आंदोलन के प्रसंगो का बहुत ही सजीव चित्रण किया हे । |
| दो सौ वर्ष तक कोई लड़की नही थी | बाबा फारसी ओर उर्दू जानते थे । पिता ने अग्रेजी पढ़ी थी मटा से हिन्दी संस्कृत भी पढ़ी । |
| लड़कियो के प्रति सामाजिक रूझन , स्कूल की सहपाठिनो छात्रावास के जीवन ओर स्वतन्त्रता आंदोलन के प्रसंगो का बहुत ही सजीव चित्रण किया हे । | पांचवे दर्जे मे क्रस्थ्वेत गर्ल्स कॉलेज भेजा वंही सुभद्रा कुमारी से परिचय संतवे दर्जे मे वह थी ब्रज भाषा मे लिखना आरंभ किया  कटोरा बापू को डे दिया |
| पारिवारिक बंधन | जेबुनिसा का कमरे मे आकर रहना  जावरा के नवाब  टाई साहिबा  मनमोहन बालक का होना |

एक कुत्ता ओर एक मेना – हजारी प्रसाद

|  |  |
| --- | --- |
| निबंध मे न केवेल पशु पक्षियो के प्रति मानवीय प्रेम प्रदर्सित हे बल्कि पशु पक्षियो से मिलने वाले प्रेम भक्ति , विनोद ओर करुणा जेसे मानवीय भावो का विस्तार भी हे | रवीन्द्रनाथ की कविताओ ओर उनसे जुड़ी स्मर्तियों के संहारे गुरुदेव की सवेदनसिलता आंतरिक विराटता ओर सहजता के चित्र तो उकेरे ही गये हे पशु पक्षियो के स्वेदनसिलता जीवन का भी बहुत सूक्षम निरीक्षण हे । यह निबंध सभी जिवो से प्रेम की प्रेरणा देता हे |
| गुरुदेव के अमन मे शांति निकेतन को छोड़कर श्रीनिकेतन के पुराने तिमंज़िले मकान मे कुछ दिन रहे | प्रति दिन प्रातकाल यह भक्त कुत्ता स्तब्ध होकर आसन के पास तब तक बेठ जाता हे जब तक अपने हाथो से स्पर्श से मे संग नही स्वीकार करना  कोवे कहा ज्ञे  लंगड़ी मेना फुदक रही थी |